शिवानी शाह, "रंगों से जला दीप"(विंसेंट वैन गॉग को समर्पित), कला समीक्षा, खंड 1, अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 38

"रंगों से जला दीप"(विंसेंट वैन गॉग को समर्पित)

शिवानी शाह*

वह जो चला अकेला,
पर भीड़ के शोर से ऊँचा।
कपड़े फटे, मन टूटा,
पर सपनों में था सूरज पूरब का।

जिसने अंधेरे से बनाई रौशनी,
और पागलपन से रची अमरता।
हर स्ट्रोक में थी आग कोई,
हर रंग में आत्मा की गति थी।

सूरजमुखी बोले उसकी भाषा,
तारों भरी रातें बनीं गाथा।
उसने जिन्दगी नहीं,
पर हर पल को चित्रित किया
जैसे हर धड़कन एक कविता हो।

लोगों ने कहा, "पागल है यह!"
उसने कहा, "तो क्या?"
अगर पागलपन ही वो पुल है
जो दुनिया को सुंदरता से जोड़ता है–
तो हाँ, मैं पागल हूँ।

थियो को भेजे हर पत्र में
था प्रेम, पीड़ा और कला का इत्र।
उसने देखा उम्मीद को भी
रंगों की धार से पिघलते हुए।

जो न समझे उस समय उसे,
अब उसी के चित्रों में जीवन धड़कता है।
मृत्यु से भी जिसने जीता जीवन–
वह वैन गॉग था, है, रहेगा।

"अगर कभी लगे कि कोई नहीं समझता तुम्हें,
तो याद रखना–विंसेंट भी अकेला था,
पर उसके रंगों ने इतिहास बदल दिया।"